

## विचार बिन्दु

जिसने निश्चय कर लिया, उसके लिए बस करना बाकी रह जाता है।  
—इटैलियन कहावत

## काश! मुझे यह नहीं लिखना पड़ता कि मेरा माथा शर्म से झुका हुआ है!

मेरा माथा शर्म से झुका हुआ है। यह लिखकर भी मैं अपनी पूरी व्यथा का एक बहुत छोटा अंश ही सम्प्रेषित कर पा रहा हूँ। मैं जन्मजात भारतीय हूँ और मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व रहा है, लेकिन अब लग रहा है कि मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व करने का कोई अधिकार नहीं रह गया है? घमण्डी, बड़बोले, बदमिजाज और अमानवीय डोनाल्ड ट्रम्प के अमरीका ने जिस वधशी और अपमानजनक तरीके से मेरे एक सौ चार नागरिक बंधुओं को भारत भेज कर हमारे स्वाभिमान को चकनाचूर किया है वह जितना दुखद है उससे भी ज्यादा दुखद और लज्जाजनक यह है कि हमारे सरकारी वक्तव्य ने अमरीका के इस कृत्य को सहज स्वाभाविक बताया है। किसी भी संकट की घड़ी में हम अपने देश की सरकार से यह उम्मीद करते हैं कि वह हमारी रक्षा के लिए, हमारा मान बचाने के लिए आगे आएगी लेकिन ऐसा हुआ नहीं। सरकार मुंह में दही जमाए बैठी है, जैसा वह पिछले काफी समय से करने लगी है। जब उसे अपना गुणगान करना होता है, बड़-चड़कर बातें करनी होती है, विपक्षियों पर प्रहार करना होता है, वर्तमान की असफलताओं का ठीकरा 1964 में दिवंगत को चुके जवाहर लाल नेहरू के माथे फोड़ना होता है तब उसकी मुखरता देखते ही बनती है। हम विश्व गुरु हो जाते हैं, दुनिया की सुर्यापंख बन जाते हैं, दुनिया के बड़े नेता हमारे नेता के लीन मित्र प्रचारित कर दिये जाते हैं, दुनिया भर के देशों में भाड़े की भीड़ जुटा कर अपनी जयजयकार करवा ली जाती है लेकिन जब देश पर किसी भी तरह का कोई संकट आता है तो हम मौन हो जाते हैं। और या फिर कोई इतर नाटक कर समस्या से ध्यान बंटाने का बेहदा प्रयास करने लग जाते हैं। इस बार भी यही हुआ है लेकिन इस बार तो जैसे अति ही हो गई है।

अमरीका ने वहां अवैध रूप से रह रहे भारतीयों को जिस अमानवीय और अपमानजनक तरीके से भारत भेजा उसके बारे में जानकर किसी भी भारतवासी का खून खौल सकता है। एक अमरीकी सैन्य विमान में 36 घण्टे से भी अधिक समय तक हाथों में हथकड़ी और पांवों में जंजीर बंधे पंजाबी लोगों को विमान में अपनी पगड़ी तक उतारने को मजबूर किया गया। अमरीकी सैन्य विमान को दिल्ली में नहीं अमृतसर में उतारा गया और मीडिया को उसके पास भी नहीं फटकने दिया गया। यहीं यह भी याद कर लें कि अमरीका में अवैध रूप से केवल भारतीय ही नहीं रहते रहे हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार अमरीका में लगभग ढाई लाख चीनी भी अवैध रूप रह रहे हैं। लेकिन उनके साथ अमरीका ने ऐसा अपमानजनक बर्ताव नहीं किया। इसकी एक वजह शायद यह भी है कि दुनिया के किसी भी देश में अगर चीनी नागरिकों के साथ दुर्व्यवहार होता है तो चीन तुरंत उस देश के कुछ नागरिकों को अपने देश की जेलों के भीतर कर देता है। चीन ने अमरीका के अनेक नागरिकों को सीआईए के लिए जासूसी करने या नशीली दवाएं बेचने के अपराध में जेल में बन्द कर रखा है, इसलिए अवैध रूप से अमरीका में रह रहे चीनी नागरिकों को किसी सैन्य विमान में हथकड़ियाँ-बेड़ियों में जकड़ कर चीन लौटाने की बात अमरीका शायद सोच भी नहीं सकता। वैसे सवाल यह भी है कि अमरीका अपने देश से अवैध नागरिकों को बाहर निकाले, यह तो ठीक लेकिन ऐसा करने के लिए उसे अमानवीय और अपमानजनक तरीका अपनाने की जरूरत क्यों पड़ी? क्या वह हमने अपनी औकात बताना चाह रहा था?

“उसने कुछ अन्य देशों के साथ भी ऐसा ही करना चाहा। लेकिन उन्होंने क्या किया? एक छोटा-सा देश है कोलंबिया। जनसंख्या मात्र पांच दशमलव दो करोड़। अर्थव्यवस्था भी कोई खास बड़ी नहीं, दुनिया में 39 वें नम्बर पर। याद रखना कि हम अपनी अर्थव्यवस्था को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बताते नहीं थकते हैं। अमरीका ने एक मालवाहक जहाज सी-17 से जब कोलंबियाई नागरिकों को कोलंबिया भेजा तो वहां के राष्ट्रपति गुस्तावोपेट्रो ने उस अमरीकी विमान को अपने यहां उतरने देने की अनुमति देने से मना करने का साहस दिखाया। पेट्रो ने कहा, प्रवासी अपराधी नहीं होता है और उसके साथ मनुष्योचित गरिमामापूर्ण बर्ताव किया जाना चाहिए। यही वजह है कि मैंने उन अमरीकी सैन्य वायुयानों को लौटा दिया है जो कोलंबियाई प्रवासियों को ला रहे थे। मैं नहीं चाहता कि मेरे देश के प्रवासी ऐसे देश में रहें जो उन्हें अपने यहां नहीं रखना चाहता है, लेकिन अगर वह देश उन्हें हमारे यहां भेजना चाहता है तो वह उन्हें उनके और मेरे देश के प्रति सम्मान और गरिमा के साथ भेजे। हम अपने साथी नागरिकों का स्वागत बिना उनके साथ अपराधियों जैसा बर्ताव किए, नागरिक विमानों में करेंगे। कोलंबिया का सम्मान बना रहे!” और अमरीकी विमान हवा में चक्कर लगाकर लौट गया। इसके बाद उस छोटे-से देश कोलंबिया ने अपने यहां से दो पैसंजर वायुयान अमरीका भेजे और अपने नागरिकों को सम्मान अपने यहां बुलाया। और केवल इतना ही नहीं, जब कोलंबियाई नागरिकों को लेकर ये विमान वहां की राजधानी बोगोटा पहुंचे तो खुद राष्ट्रपति गुस्तावोपेट्रो उस जहाज के भीतर गए और अपने नागरिकों से कहा, “अब आप आजाद हैं और अपनी मातृभूमि पर हैं, आप निराश न हों। सरकार आपके लिए हर संभव मदद उपलब्ध कराएगी और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराकर कोलंबिया में इज्जत की जिंदगी जीने में मदद करेगी। यह होती है एक जिम्मेदार सरकार। हमने क्या किया? अपने नागरिकों को अपमानित होने दिया। बेशक उनमें से बहुत सारे लोग गलत तरीकों से अमरीका गए थे। बहुत संभव है कि बहुत सारे गलत तरीकों से स्वेच्छा से न गए हों और ठगी के शिकार हुए हों। विचारणीय यह भी है कि जिस देश का मूल मंत्र जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपिगरीयसी है उस देश के नागरिक, और उस देश के नागरिक जहां हर इलाके में यह कथन प्रचलित है कि चाहे हम रूखा-सूखा खा लेंगे लेकिन अपना इलाका छोड़ कर अन्यत्र नहीं जाएंगे, वे क्यों अवैध तरीकों से अमरीका जाने की जुगत भिड़ते हैं, और अगर जा पाने में सफल हो जाते हैं तो भी वहां निहायत अमानवीय हालात में रह कर अपना पेट पालते हैं! आप असंवेदनशील होकर बहुत आसानी से कह सकते हैं कि वे डॉलर की चकाचौंध में यह सब करते हैं, यथार्थ इतना सपाट नहीं है। असल में हम अपने नागरिकों के लिए पर्याप्त रोजगार पैदा कर पाने में बुरी तरह नाकामयाब रहे हैं। भले ही चुनावों के दौरान हमने करोड़ों नौकरियां देने के वादे किए हों, वे वादे मूर्त रूप ले पाते इसके लिए हमने कुछ नहीं किया। ऐसे में अगर हमारे नागरिक इधर उधर की कुंजुत भिड़ते हैं तो गुस्से के सहित नहीं किया। पत्र हैं और फिर इसे सबके ऊपर, अंततः तो वे भारतीय हैं और उनकी परवाह अगर उनका अपना देश नहीं करेगा तो कौन करेगा? कोलंबिया के राष्ट्रपति अपने नागरिकों को आश्चर्यजनक प्रदान कर सकते हैं, हमारे बड़े नेताओं में यह संवेदनशीलता और मानवीयता क्यों नहीं है?”

अमरीका ने एक मालवाहक जहाज सी-17 से जब कोलंबियाई नागरिकों को कोलंबिया भेजा तो वहां के राष्ट्रपति गुस्तावोपेट्रो ने उस अमरीकी विमान को अपने यहां उतरने देने की अनुमति देने से मना करने का साहस दिखाया। पेट्रो ने कहा, प्रवासी अपराधी नहीं होता है और उसके साथ मनुष्योचित गरिमामापूर्ण बर्ताव किया जाना चाहिए।

बेशक अमरीका एक शक्तिशाली देश है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हर कोई उसकी ममाना की सर झुका कर स्वीकार कर ले। जरा देखें मैक्सिकन राष्ट्रपति क्लाउडिया रियानबाम ने ट्रम्प को क्या कहा है। उनका कहा एक-एक शब्द गौर तलब है, तो, आपने दीवार बनाने के लिए वोट दिया... खैर, प्यारे अमेरिकियों, भले ही आपको भूगोल के बारे में ज्यादा जानकारी न हो, क्योंकि अमेरिका आपके लिए आपका देश है, महाद्वीप नहीं, इसलिए यह जरूरी है कि आप पहली ईंट रखे जाने से पहले ही पता लगा लें कि उस दीवार के पार 7 अरब लोग हैं। लेकिन चूंकि आप वास्तव में 'लोग' शब्द नहीं जानते, इसलिए हम उन्हें 'उपभोक्ता' कहेंगे। 7 अरब उपभोक्ता 42 घंटे से भी कम समय में अपने को सैमसंग या हुआवेई डिवाइस से बदलने के लिए तैयार हैं। वे लेवी की जगह ज़ाय या मासिमोड्टी भी ले सकते हैं। छह महीने से भी कम समय में, हम आसानी से फ़ोर्ड या शेवरेले की कारें खरीदना बंद कर सकते हैं और उनकी जगह टोयोटा, किआ, माज़्दा, होंडा, हुंडई, वोल्वो, सुबार्क, रेनॉल्ट या बीएफएडब्ल्यू ले सकते हैं, जो तकनीकी रूप से उनके द्वारा उत्पादित कारों से बेहतर हैं। वे 7 बिलियन लोग डायरेक्ट टीवी की सदस्यता लेना भी बंद कर सकते हैं, और हम ऐसा नहीं करना चाहते, लेकिन हम हॉलीवुड की फिल्मों देखना बंद कर सकते हैं और अधिक लैटिन अमेरिकी या यूरोपीय प्रोडक्शन देखना शुरू कर सकते हैं, जिनमें बेहतर गुणवत्ता, संदेश, सिनेमाई तकनीक और सामग्री है। हालांकि यह अविश्वसनीय लग सकता है, हम डिज्नी को छोड़ सकते हैं और कैनकन, मैक्सिको, कनाडा या यूरोप में एक्सकेरेट रिसॉर्ट जा सकते हैं: दक्षिण, पूर्वी अमेरिका और यूरोप में अन्य बेहतर गंतव्य हैं। और भले ही आपको विश्वास न हो, मैक्सिको में भी मैडकॉनलड्स से बेहतर बर्ग हैं और उनमें बेहतर पोषण सामग्री है। क्या किसी ने अमेरिका में पिरामिड देखे हैं? मिश्र, मैक्सिको, पेरू, ग्वाटेमाला, सूडान और अन्य देशों में अविश्वसनीय संस्कृतियों वाले पिरामिड हैं। जानें कि प्राचीन और आधुनिक दुनिया के अजूबे कहाँ हैं... उनमें से कोई भी अमेरिका में नहीं है... ट्रम्प पर शर्म आती है, उन्होंने इसे खरीदा और बेचा होगा! हम जानते हैं कि एडिडास मौजूद है, न कि केवल नाइकी और हम पैनम जैसे मैक्सिकन टेनिस जूते पहनना शुरू कर सकते हैं। हम जितना सोचते हैं, उससे कहीं ज्यादा जानते हैं। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि अगर ये 7 बिलियन उपभोक्ता उनके उत्पाद नहीं खरीदते हैं, तो बेरोजगारी होगी और उनकी अर्थव्यवस्था (नस्लवादी दीवार के भीतर) इतनी ढह जाएगी कि वे हमसे इस बदरसत दीवार को तोड़ने की भीख मांगेंगे। हम ऐसा नहीं चाहते थे लेकिन.. आप दीवार चाहते हैं, आपको दीवार मिलती है। ईमानदारी से आभार के साथ।

मैक्सिको की राष्ट्रपति ने अमरीका को उसकी आर्थिक सीमाएं बताते हुए बेबाक धमकी दे डाली। लेकिन हम क्या करते हैं? हमारा सारा जोर अपने देश के अल्पसंख्यकों की रोजी-रोटी छीनने तक सीमित रह जाता है। अमरीका जैसा देश हमारे राष्ट्रीय सम्मान को ध्वस्त करे तो हम ऐसा कोई प्रतीकात्मक विरोध प्रदर्शन तक करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं। काश! ऐसा साहस हमारी सरकार ने भी दिखाया होता। तब मुझे यह नहीं लिखना पड़ता कि मेरा माथा शर्म से झुका हुआ है।

—अतिथि संपादक,  
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल  
(शिक्षाविद और साहित्यकार)



राजेन्द्र भागवत

5 फरवरी 2025 को तीन प्रमुख घटनाएं हुईं— पहली, दिल्ली विधानसभा के लिए मतदान, दूसरी, प्रयागराज में चल रहे कुंभ के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दौरा और उनके द्वारा संगम पर किया नौका विहार और तीसरी, अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे 104 भारतीयों को लेकर अमेरिका के वायु सेवा के विमान को अमृतसर पहुंचना। इन तीन मुख्य घटनाओं में से एक का सभी राष्ट्रीय चैनलों पर भरपूर प्रसारण किया गया, विशेष कर प्रधानमंत्री मोदी द्वारा संगम में डुबकी लगाने के वीडियो दिन भर प्रत्येक चैनल पर निरंतर चलते रहे। इन दो घटनाओं के बीच में जो तीसरी घटना थी, वह मीडिया में कोई स्थान नहीं पा सकी। केवल सोशल मीडिया पर अवश्य, कभी कभार कुछ समाचार और वीडियो जरूर आ गए।

वैसे तो अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे भारतीयों को कई वर्षों से निरंतर यहां भेजा जा रहा है। इस बार डोनाल्ड ट्रंप ने राष्ट्रपति बनते ही विदेशी अवैध नागरिकों के प्रति कड़ा रुख अपनाया गया। ट्रंप ने शायद ग्रहण करते ही स्पष्ट कर दिया था कि अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे लोगों को, वे अपने-अपने देश में तत्काल भेज देंगे। स्वदेश रवाना करने

से पूर्व इन्हें अमेरिका में नजर बंद रखा गया।

अमेरिकी वायुसेना का विमान जब 104 भारतीयों को लेकर, अमृतसर में 5 फरवरी को उतरा, तब इन सबके हाथों में हथकड़ी और पांवों में बेड़ियां थीं। इनमें 25 महिलाएं और 12 बच्चे भी थे। इनमें सर्वाधिक संख्या गुजरात, पंजाब हरियाणा के रहने वालों की थी। इस पूरी खबर को सभी प्रमुख मीडिया चैनलों ने लगभग ब्लैकआउट ही कर दिया गया था। जब सोशल मीडिया पर इसके समाचार और वीडियो प्रसारित होने लगे तो फिर संसद में संसद सदस्यों ने इस बारे में सरकार से जवाब तलब किया। इसे 145 करोड़ भारतीयों का अपमान बताया गया। यह विडंबना ही है कि जिस समय प्रधानमंत्री संगम में डुबकी लगा रहे थे, उसी समय 104 भारतीय नागरिकों को कैदियों या आतंकवादियों की तरह भारत लाया गया। मीडिया के किसी भी व्यक्ति को किसी भारतीय से बात नहीं करने दी गई। यह उल्लेखनीय है कि भारत के साथ ही पांच अन्य देशों ग्वाटेमाला, पेरू, मैक्सिको, होंडुरस और कोलंबिया के नागरिकों को भी इसी प्रकार संबंधित देशों में भेजा गया। कोलंबिया के राष्ट्रपति पेट्रो ने अमेरिकी वायु सेना के विमान को अपने देश में उतरने की अनुमति नहीं दी और स्पष्ट कह दिया कि हम अपने नागरिकों को अपना विमान भेजकर बुला लेंगे। अमेरिका को इस बात पर सहमति व्यक्त करनी पड़ी। तब, कोलंबिया के रहने वाले अवैध नागरिकों को विशेष यात्री विमान के माध्यम से गरिमा पूर्व तरीके से वापस कोलंबिया लाया गया। कोलंबिया पहुंचने पर वहां के राष्ट्रपति इन लोगों से मिलने वायुयान में गए। प्रश्न यह है कि जब कोलंबिया के राष्ट्रपति अपने नागरिकों की गरिमा

बचाए रखते हुए अमेरिकी सरकार को मजबूर कर सकते हैं कि कोलंबिया के विमान से उन्हें लाया जाएगा, तो भारत के प्रधानमंत्री ऐसा क्यों नहीं कर सकते? यह एक प्रकार से, भारत की कूटनीतिक असफलता ही मानी जाएगी। यह सही है कि ये सब अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे थे और उन्हें वहां रहने का कोई अधिकार नहीं था।

भारत के प्रधानमंत्री मोदी, भारत की तेजी से होने वाली प्रगति का गुणगान करते रहे हैं और भारत को कई बार विश्व गुरु कहने से भी नहीं चूकते हैं। जिस प्रकार 104 भारतीयों को आतंकवादियों की तरह हथकड़ियों और बेड़ियों में झकड़ कर इन्हें अमानवीय तरीके से भेजा गया, वह किसी भी विश्व गुरु के लिए सम्मान का विषय तो नहीं ही कहा जा सकता।

कहा जाता है कि जिस विमान में भारतीयों को लाया गया, उसमें केवल एक टॉयलेट था और उसका उपयोग करते समय भी उसका दरवाजा बंद नहीं किया गया और न ही संबंधित व्यक्ति की बेड़ियों और हथकड़ियां खोली गईं। प्रधानमंत्री मोदी, स्वयं को ट्रंप का परम मित्र बताते रहे हैं और उन्हें उनके प्रथम नाम 'डोनाल्ड' से सार्वजनिक रूप से संबोधित भी करते हैं और उन्हें गले भी लगाते हैं। इन सब के बावजूद, भारत के प्रति अमेरिका का यह व्यवहार शर्मनाक है। इस बारे में भारत के विदेश मंत्री एवं विदेश मंत्रालय द्वारा किसी भी प्रकार का विरोध प्रकट न करना भी समझ से परे है।

भारत ने किस प्रकार अमेरिका के सामने समर्पण - सा कर दिया है, यह इसी से स्पष्ट होता है कि अमेरिका द्वारा भारत से आयात होने वाली वस्तुओं पर द्यूटी बढ़ाए जाने के निर्णय से पूर्व ही, भारत ने संकेत समझते हुए अमेरिका के भारत में आने वाली हॉलैंड डेविडसन

मोटरसाइकिलों पर आयात शुल्क 20 प्रतिशत कम कर दिया ताकि उनका व्यवसाय यहां पर अधिक हो सके।

भारतीयों के साथ अमेरिका में कैसा व्यवहार किया गया, इसकी जानकारी तो जब लौटे हुए यात्री मीडिया से बात करेंगे, तब समने आएगी। जो समाचार मिल रहे हैं, वे इस बात को स्पष्ट करते हैं कि उनके साथ गरिमा पूर्ण व्यवहार तो दूर की बात है, मानवीय व्यवहार भी नहीं किया गया। अमेरिका में अवैध रूप से रह रहे 17000 भारतीयों को चिन्हित कर लिया गया है और शीघ्र ही इन्हें भी भेजा जाएगा। अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे भारतीयों को वापस भेजने का क्रम कई सालों से चल रहा है, किंतु इस प्रकार से अपमानजनक रूप में उन्हें भेजने की कार्रवाई अमरीका द्वारा पहली बार की गई है।

कुल मिलाकर, हम तो यही कह सकते हैं कि जिस प्रकार अमेरिका ने अपमानजनक व्यवहार अमेरिका ने भारत के साथ किया है, वह भारत के विश्व गुरु होने के दावे को एकदम ध्वस्त कर देता है। अब भी, भारत के विदेश मंत्रालय को विरोध दर्ज करना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा देश को यह विश्वास दिलाया चाहिए कि वे इस प्रकरण को, जब भी ट्रंप से मिलेंगे, उनके समझ उठाएंगे।

यहां एक और प्रश्न विचारणीय है कि भारत से इतने सारे लोग अवैध रूप से अत्यंत कष्टप्रद परिस्थितियों में क्यों अमेरिका जाना चाहते हैं? कारण स्पष्ट है, भारत में रोजगार और गरिमा पूर्ण जीवन यापन करने के समुचित अवसर उपलब्ध नहीं हैं।

जो सरकार शीघ्र ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनने का दावा करती है और देश को प्रगति के पद पर तेजी से बढ़ाने की बात कर

रही है, उसे यह विचार करना चाहिए कि इतने अधिक लोग क्यों भारत की नागरिकता को छोड़ रहे हैं? अमेरिका में अवैध रूप से जाने वालों ने अपनी जमीन-जायदाद बेचकर लाखों रुपए अर्जेंटों को दिए हैं। यद्यपि रोजगार के समुचित अवसर अपने ही देश में उपलब्ध हों तो भला क्यों कोई अपनी मातृभूमि को छोड़कर, विदेश में अमानवीय कष्ट सहने के लिए जाएगा?

गत कुछ समय से देखा गया है कि जब भी देश के समक्ष अटपटी स्थिति उत्पन्न होती है, प्रधानमंत्री मौन धारण लेते हैं, चाहे वह मणिपुर जाने का मामला हो, महाकुंभ में हादसे का मामला हो या फिर भारत के अपमान का मामला। देश उनसे यह अपेक्षा करता है कि वह अपनी ओर से देश को समझा सकें कि वे किसी भी कौमत्त पर भारत के स्वाभिमान को ठेस नहीं लगने देंगे और जब भी किसी के द्वारा ऐसा करने का प्रयास किया जाएगा तो वे कड़ी कार्यवाही करेंगे।

सरकार को इसकी भी बहुत गहन जांच करनी चाहिए कि वे कौन लोग हैं जो भारतीय नागरिकों से बड़ी धनराशि लेकर, अच्छे जीवन के सपने दिखाकर अवैध रूप से अमेरिका भेजते रहे हैं? इस विषय पर अच्छी फिल्म 'डकी' भी आई थी, जिसमें बताया गया था कि किस प्रकार भारतीयों को जान जोखिम में डालकर उन्हें विदेश भेजा जाता है। ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध कड़ी आपराधिक कार्यवाही करके उन्हें सजा दी जानी चाहिए, ताकि भविष्य में इनके जाल में फंसने से भोले-भाले नागरिकों को बचाया जा सके। फिलहाल तो देश इस अपमानजनक व्यवहार पर प्रधानमंत्री और भारत सरकार से कार्यवाही की प्रतीक्षा कर रहा है।

—राजेन्द्र भागवत,  
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

## प्रभाशंकर उपाध्याय के व्यंग्य संग्रह “इनविजिबल इडियट” का विमोचन

प्रभाशंकर उपाध्याय की यह सातवीं पुस्तक है, इससे पहले उनके नाश्ता मंत्री का गरीब के घर, काग के भाग बड़े सहित चुनिंदा व्यंग्य प्रकाशित हो चुके हैं

सवाई माधोपुर, (निर्स) सूचना केंद्र में सवाई माधोपुर के सांस्कृतिक-साहित्यिक मंच बतलावण के तत्वाधान पर राष्ट्रीय स्तर के व्यंग्यकार कथाकार प्रभाशंकर उपाध्याय की पुस्तक “इनविजिबल इडियट” का विमोचन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कवि राधेश्याम अटल ने की। विशिष्ट अतिथि हास्य कवि गोपीनाथ चंचित गंगारूप सिटी थे। विमोचन समारोह में वरिष्ठ कवि ताऊ शेखावती ने भी शिरकत की।

उल्लेखनीय है कि प्रभाशंकर उपाध्याय की यह सातवीं पुस्तक है। इससे पहले उनकी नाश्ता मंत्री का गरीब के घर, काग के भाग बड़े, यादों के दरीचे, बेहतरीन व्यंग्य, बहेलिया (उपन्यास), चुनिंदा व्यंग्य प्रकाशित हो चुकी हैं। इस अवसर पर उपाध्याय के व्यक्तित्व एवं रचनाशैली पर सवाई माधोपुर के ख्यातमान कवि विनोद पदरज, पुस्तक की रचनाओं पर बात करते हुए कवि प्रभात ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के खतरों



राष्ट्रीय स्तर के व्यंग्यकारप्रभाशंकर उपाध्याय की पुस्तक “इनविजिबल इडियट” का विमोचन हुआ।

से आगाह किया। चिंतक डॉक्टर रमेश वर्मा ने उपाध्याय की रचना धर्मिता पर बात की। वरिष्ठ कवि शिव योगी ने लेखक के साथ एक पुराना संस्मरण साझा किया।

जिला न्यायालय के प्रोटोकॉल एवं प्रशासनिक अधिकारी प्रवीण शर्मा ने नाश्ता मंत्री का गरीब व्यंग्य कथा का स्मरण करते हुए लेखक के साथ अपने अनुभव बताए।

अध्यक्षीय उद्बोधन में राधेश्याम अटल ने व्यंग्य, तंज कटाक्ष व हास्य के अंतर्निहित को स्पष्ट करते हुए कहा कि पुस्तकों की प्रासंगिकता कभी खत्म नहीं होगी भले ही वर्तमान में

कवि प्रभात ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के खतरों से आगाह किया

मोबाइल का चलन ज्यादा है पर हमें पुस्तकों की ओर ही लौटना पड़ेगा। विशिष्ट अतिथि गोपीनाथ चंचित ने उपाध्यायजी के बचपन से जुड़े संस्मरणों को सुनाया।

कार्यक्रम में इंटेक के को-ऑर्डिनेटर पदम खत्री, प्रधानाचार्य, दिल्ली शर्मा जिला अध्यक्ष निजी स्कूल संस्थान, चंदा राजवत, चित्रकार सुनीता, शशि, चंद्रशेखर शर्मा, राजेश शर्मा, चंद्र प्रकाश शर्मा, राम गोपाल गुणसारिया सहित बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी और छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन लघुकथा लेखक व जिला न्यायालय के सदस्य विजय सिंह राठीड ने बताया कि आयोजन को सफल बनाने के लिए एक परामर्श मंडल बनाया गया है।

## “बीकानेर थिएटर फेस्टिवल” को लेकर तैयारियां परवान पर

बीकानेर, (निर्स) बीकानेर में आयोजित होने जा रहे बीकानेर थिएटर फेस्टिवल की तैयारियां परवान पर है। देशभर के चर्चित नाटक बीकानेर शहर के विभिन्न ऑडिटरियम में मंचित किये जाएंगे और अपने नाटकों का मंचन अपने परिवार सहित निःशुल्क देख सकेंगे।

आयोजन समिति के टी एम तालाणी ने बताया कि फेस्टिवल का

हिस्सा बनने के लिए इस बार उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश के साथ-साथ प्रदेश के जयपुर, जोधपुर, भीलवाड़ा, सीतापुर, बीकानेर आएंगे और अपने नाटकों का मंचन करेंगे। फेस्टिवल के दौरान देशभर के लगभग पांच सौ रंगकर्मीयों का जमावड़ा बीकानेर में होगा और भारतीय रंगकर्म के वर्तमान स्वरूप,

उपलब्धियों और चुनौतियों पर चर्चा की जायेगी। आयोजन समिति के हंसराज डागा ने बताया कि इस बार बीकानेर थिएटर फेस्टिवल के दौरान नाटकों के मंचन के साथ प्रत्येक दिन देश के गुणी रंगकर्मीयों के साथ युवा कलाकारों की मास्टर क्लास का आयोजन भी किया जाएगा। फेस्टिवल से जुड़े अर्थशास्त्री और शिक्षाविद् डॉ.

पी एस वोहरा ने बताया कि इस साल के बीकानेर थिएटर फेस्टिवल में सिनेमा के प्रसिद्ध अभिनेता राजेंद्र गुप्ता और हिमानी शिवपुरी अपना प्रसिद्ध नाटक ‘जीना इसी का नाम है’ प्रस्तुत करेंगे।

फेस्टिवल से जुड़े युवा रंगकर्मी सुनील जोशी ने बताया कि बीकानेर थिएटर फेस्टिवल के माध्यम से हमारे शहर के लोगों को थिएटर के प्रसिद्ध

अभिनेताओं से रूबरू होने और अलग अलग तरह के मनोरंजक नाटकों को देखने का मौका मिलेगा। इस दौरान प्रदर्शनी और रंग-चर्चों भी आयोजित होंगी। सभी नाटकों के मंचन में और रंग चर्चाओं में दर्शकों का प्रवेश निःशुल्क होगा। आयोजन समिति के सदस्य विजय सिंह राठीड ने बताया कि आयोजन को सफल बनाने के लिए एक परामर्श मंडल बनाया गया है।

### राशिफल सोमवार 10 फरवरी, 2025



पंडित अनिल शर्मा

माघ मास शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, सोमवार विक्रम संवत् 2081, पुर्नवसु नक्षत्र सांय 6:01 तक प्रीति योग दिन 10:26 तक, कौलव कर्ण प्रातः 7:12 तक, चन्द्रमा आज दिनांक 11:57 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति : सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मिथुन, बुध-मकर, गुरु-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या। आज सवार्थसिद्धी योग सांय 6:01 से सूर्योदय तक है। रवि योग सांय 6:01 से आरम्भ होगा। आज सोम प्रदोष व्रत कल्पाद है।

श्रेष्ठ चौघडिया- अमृत : सूर्योदय से 8:14 तक शुभ 9:42 से 11:09 तक, चर 02:05 से 3:33 तक लाभ अमृत 3:33 में सूर्यास्त तक, राहुकाल 7:30 से 9:00 तक, सूर्योदय 7:11 सूर्यास्त 06:11

**मेघ**  
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से सम्पन्न होंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

**सिंह**  
आर्थिक वित्ति मामलों में सन्तुलन बनाये रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अनुबन्ध प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे। दिन में मध्याह्न पश्चात अनावश्यक धन खर्च होगा।

**धनु**  
परिवार में आपसी सहयोग सम्बन्ध बना रहेगा। परिवार में परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्याह्न पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

**वृष**  
आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बने लगे। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। सम्भावित खोत से धन प्राप्त होगा।

**कन्या**  
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

**तुला**  
नवीन कार्यों के सम्बन्ध में सकारात्मक आश्वान प्राप्त होंगे। अटक हुए कार्य बने लगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मिथुन**  
व्यावसायिक कार्य से सम्बन्धित यात्रा सम्भव है। नौकरि पेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

**कर्क**  
व्यावसायिक कार्यों के कारण भाग-दौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

**वृश्चिक**  
चन्द्रमा अष्टम भाग में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्याह्न पश्चात अटक हुए कार्य बने लगे।

**मकर**  
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। अटक हुए कार्य बने लगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक बातों के लिए दिन अच्छा है।

**कुंभ**  
व्यावसायिक कार्यों के सम्बन्ध में उचित सोच विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वन हो सकता है। स्वास्थ्य सम्बन्धित चिन्ता दूर होगी।

**मीन**  
घर परिवार में अतिथियों का आमन रहेगा। परिवार में धार्मिक मौलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

**मिथुन**  
व्यावसायिक कार्यों के सम्बन्ध में उचित सोच विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वन हो सकता है। स्वास्थ्य सम्बन्धित चिन्ता दूर होगी।

**वृश्चिक**  
चन्द्रमा अष्टम भाग में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्याह्न पश्चात अटक हुए कार्य बने लगे।

**कर्क**  
व्यावसायिक कार्यों के कारण भाग-दौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

**वृश्चिक**  
चन्द्रमा अष्टम भाग में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्याह्न पश्चात अटक हुए कार्य बने लगे।

**तुला**  
नवीन कार्यों के सम्बन्ध में सकारात्मक आश्वान प्राप्त होंगे। अटक हुए कार्य बने लगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मिथुन**  
व्यावसायिक कार्य से सम्बन्धित यात्रा सम्भव है। नौकरि पेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

**कर्क**  
व्यावसायिक कार्यों के कारण भाग-दौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

**वृश्चिक**  
चन्द्रमा अष्टम भाग में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्याह्न पश्चात अटक हुए कार्य बने लगे।

**तुला**  
नवीन कार्यों के सम्बन्ध में सकारात्मक आश्वान प्राप्त होंगे। अटक हुए कार्य बने लगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मिथुन**  
व्यावसायिक कार्य से सम्बन्धित यात्रा सम्भव है। नौकरि पेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।